

लसोड़ा से कम लागत में अधिक आमदनी

अनोप कुमारी*, महेश चौधरी** और अर्जुन सिंह जाट*

लसोड़ा जिसे गोंदा भी कहते हैं, *बोरेजिनेसी* कुल का पौधा है। यह कॉर्डिया वंश के अंतर्गत आता है एवं इसका वैज्ञानिक नाम कॉर्डिया मिक्सा है। यह लेहसूआ, गूदी, गोंदबेरी, इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। इसे रेगिस्तान की चेरी भी कहते हैं। आम के आम, गुठलियों के दाम' वाली कहावत इसके लिए सटीक बैठती है। अगर किसान, पौधों का रोपण खेत के चारों ओर वायुरोधक वृक्ष के रूप में करते हैं तो यह फसलों की शीतलहर एवं गर्मी से तो रक्षा करता ही है, साथ में पौधों से फल भी प्राप्त होते रहते हैं।



सारणी 1. लसोड़ा फल में उपस्थित पोषक तत्व (प्रति 100 ग्राम खाने योग्य भाग में)

पोषक तत्व	पोषक तत्व मान
नमी (प्रतिशत)	82.5
प्रोटीन (ग्राम)	1.8-2.0
कार्बोहाइड्रेट (ग्राम)	12.2
रेशा (ग्राम)	0.3
कैल्शियम (मि.ग्रा.)	40
फॉस्फोरस (मि.ग्रा.)	60
लोहा (मि.ग्रा.)	0.0005
पोटाश (प्रतिशत)	1.66
राख (प्रतिशत)	2.13
ऊर्जा (किलो कैलोरी)	65
टी.एस.एस. (प्रतिशत)	10.2
वसा (ग्राम)	1.0
अम्लता (प्रतिशत)	0.2
पेक्टिन (प्रतिशत)	4.5

लसोड़ा का पौधा बहुपयोगी प्रवृत्ति का होता है। कच्चे फलों का उपयोग अधिकतर सब्जी व अचार तैयार करने में किया जाता है। पूर्ण पके फल मीठे तो होते हैं और इनका उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में खाने के लिए किया जाता है, लेकिन फलों में लसलसा चिपचिपा पदार्थ अधिक होने से यह अधिक प्रचलित नहीं है।

शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्रों में पोषण आपूर्ति के साथ ही यह आय का भी एक अतिरिक्त स्रोत बन सकता है। इसका अचार स्वादिष्ट होने के साथ ही गुणकारी भी माना जाता है, जिसके कारण इसके फलों की मांग काफी रहती है। बाजार में लसोड़ा के फल 30-40 रुपये प्रति किलोग्राम तक आसानी

*कृषि विज्ञान केन्द्र, मौलासर, नागौर (कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान); **कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर-शेखावटी, सीकर, (श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान)

से बिक जाते हैं इतना ही नहीं फलों की अधिकता होने पर इन्हें सुखाकर भविष्य के लिए परिरक्षित भी किया जा सकता है।

पोषक तत्व मान

लसोड़ा के फल प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज तत्व, इत्यादि से समृद्ध होते हैं। लसोड़ा के फलों में पोषक तत्वों की उपलब्धता सारणी 1 में दर्शायी गयी है।



लसोड़ा के कच्चे फल



लसोड़ा के पके फल



वायुरोधक के रूप में लसोड़ा के पौधे

पौधे अधिक उत्तम होते हैं। 2-3 महीने के मूलवृत्त पर 'टी' अथवा 'आई' कलिकायन विधि द्वारा मूलवृत्त की छाल के मध्य जगह बनाकर शायन को स्थिर कर दिया जाता है। कलिकायन भूमि से लगभग 15 से 20 सें.मी. की ऊंचाई पर करते हैं। बांधते समय ध्यान रखें कि फुटान वाला हिस्सा (कलिका) खुला रहे, अन्यथा कलिका मर जाती है। यह कार्य जुलाई-अगस्त में किया जा सकता है।

रोपण का समय व तरीका

रोपण हेतु बरसात का समय सर्वोत्तम होता है। जल की उपलब्धता होने पर यह कार्य फरवरी-मार्च में भी कर सकते हैं। रोपण हेतु वर्गाकार विधि आसान व सुगम होती है, इसमें सभी प्रकार के कृषि कार्य आसानी से किये जा सकते हैं। इस हेतु सर्वप्रथम खेत का रेखांकन कर लें एवं मई-जून माह में गड्डों की खुदाई का कार्य प्रारंभ करें। गड्डों का आकार 0.75 x 0.75 x 0.75 मीटर रखें एवं दो गड्डों के मध्य की दूरी 6 x 6 मीटर

उन्नतशील किस्में

- **थार बोल्ड** : यह केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर (राजस्थान) द्वारा विकसित की गई है। फल बड़े आकार के व गुच्छों में आते हैं, पूर्णरूप से विकसित पौधों से 1.5-2.0 क्विंटल फल/पौधे प्राप्त हो जाते हैं। फल सब्जी, अचार बनाने और निर्जलीकरण उद्देश्य के लिए उपयुक्त होते हैं। फलों को खाने के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है व इनका प्रसंस्करण भी किया जा सकता है।
- **मरू समृद्धि** : इस किस्म का विकास केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी), जोधपुर द्वारा किया गया है। यह नियमित फल देने वाली उन्नतशील प्रजाति है, जिसमें रोपण के तीन वर्ष पश्चात् फलत प्रारम्भ हो जाती है। इसमें फरवरी-मार्च में पुष्पण प्रारंभ होता है एवं अप्रैल-मई में फल परिपक्व हो जाते हैं। पूर्णरूप से विकसित पौधों से औसतन 85 किलोग्राम फल/पौधे मिल जाते हैं।
- **अन्य किस्में** : करन लसोड़ा, पारस गोंदा, पुष्कर लोकल भी अधिक पैदावार देने वाली किस्में हैं।

सारणी 2. खाद एवं उर्वरकों की मात्रा (किलोग्राम प्रति पौधे की दर)

पौधों की आयु (वर्ष में)	गोबर की खाद	यूरिया	सुपर फॉस्फेट	म्यूरेट ऑफ पोटाश
एक वर्ष	10.00	00.100	-	-
दो वर्ष	20.00	00.100	00.200	-
तीन वर्ष	30.00	00.200	00.300	00.100
चार वर्ष	40.00	00.250	00.400	00.150
पांच या इससे अधिक	50.00	00.300	00.600	00.200

रखें। पौध रोपण से पूर्व 15-20 किलोग्राम प्रति गड्डे के हिसाब से सड़ी-गली गोबर की खाद डालकर पुनः भर दें। 2-3 बारिश के पश्चात जब मृदा नीचे बैठ जाये। उसके बाद रोपण का कार्य प्रारंभ करते हैं। रोपण

के समय यदि बारिश नहीं हो रही है तो तुरंत बाद सिंचाई कर दें। इसके बाद 3-4 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहें।

खाद एवं उर्वरक

पौधों को यदि संतुलित मात्रा में खाद एवं उर्वरक दिया जाए तो निश्चित रूप से पौधों की अच्छी बढ़वार के साथ-साथ अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

गोबर की सड़ी खाद जुलाई-अगस्त में तथा पुनः फल लगने से पहले फरवरी के महीने में देने से भरपूर फलों की पैदावार होती है।

सिंचाई प्रबंधन

लसोड़ा में सूखा सहन करने की क्षमता होती है। अतः इसे अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती है। पौधों को अच्छी तरह स्थापित हो जाने पर मृदा प्रकार, मौसम इत्यादि के आधार पर गर्मियों में प्रायः 7-10 दिनों एवं सर्दियों में 15-20 दिनों के अंतराल पर सिंचाई करते हैं। अच्छे फलन के लिए इसमें पत्तियां गिराना आवश्यक होता है अतः अक्टूबर से जनवरी माह तक सिंचाई बंद कर देते हैं जिससे पत्तियां पीली होकर गिर जाएं। फरवरी माह में खाद डालकर सिंचाई कर देनी चाहिए।

फलों की तुड़ाई व उपज

कलिकायन पौधों में रोपण के लगभग 3-4 वर्ष बाद फलत प्रारंभ हो जाता है। इसमें फरवरी-मार्च में पुष्पण होता है जिससे ये अप्रैल-मई में फल तुड़ाई योग्य हो जाते हैं। सब्जी व अचार के लिए फलों की तुड़ाई अपरिपक्व अवस्था में कर लेते हैं। इसके पश्चात फलों का रंग बदलने लगता है व पीले हो जाते हैं। फलों की तुड़ाई हमेशा गुच्छों में ही करें, जिससे लम्बे समय तक ताजे बने रह सकें। फलों की उपज किस्म, फसल प्रबंधन, मौसम की स्थिति इत्यादि पर निर्भर करती है। सामान्यतः एक पूर्ण विकसित पौधे से 50-80 किलोग्राम फल प्राप्त हो जाते हैं।



समय पर करें फलों की तुड़ाई